

बुद्ध का
साधन



ब्रजकिशोर

बूँद भर सावन

(आधुनिक भावभूमि के भोजपुरी कविता)

परमादरणीय दण्डी स्वामी विमलानन्द
सरस्वती जी नन्दराज
के द्वारा
लिखित
28.5.90

प्रो० ब्रजकिशोर

भोजपुरी साहित्य संस्थान

शाहगंज, महेन्द्र, पटना-८०० ००६

BOONDA BHAR SAVAN

: A Collection of Modern Bhojpuri Poems

By Prof. Brajkishore

☐ सर्वाधिकार : कवि

☐ पहिला संस्करण : अक्टूबर, १९८८

☐ मूल्य : दस रुपये मात्र

☐ प्रकाशक :

भोजपुरी साहित्य संस्थान

पटना-८०० ००६

☐ मुद्रक :

फोटो प्रिन्टर्स, पटना-६

☐ वितरक :

रूप प्रकाशन,

महेन्द्रू, पटना-६

सोन्ह गन्ध माटी के

जब 'बूँद भर सावन' के आवरण-डिजाइन के काम आर्ट कालेज (पटना) के प्राचार्य आ भोजपुरी नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर, 'ई हरनाकुस मन' के यशस्वी पुरस्कृत कवि पाण्डेय सुरेन्द्र जी के दिहलीं त जात-जात उहाँ का लवट के कहलीं—'ब्रजकिशोर जी, मोडर्न कविता का संग्रह के ई रोमाण्टिक नाँव काहे ?'

हम हँस के कहलीं—'अब त हो गइल। नीमन लागल। आजु-काल्हि के दमघोंटू परिवेश में कहीं से अनुराग के बयार डोल जाय त नीमन लागेला, मन का शकुन बरेला।'

सावन त प्रतीक ह नया सृजन के, नव उल्लास के, नया उमंग के। जेठ के जरत घामी में लमहर इन्तजारी का बाब जब आकाश में घटा उनहेला त जिनगी में आस्था के एगो नया आयाम जुड़ जाला ! पत्थर से टकरात मनई के हाथ पल भर विलम के अपना आँखि में एह आस्था आ विश्वास के ललछहूँ रंग देख लेला आ फेरू ऊहे चोट, ऊहे चट्टान !

जीवन में अमन-चैन खातिर सभकर मन तरस के रह जाता—सावन के बूँद एही शान्ति के, एही उजास के प्रतीक ह—

'सपनाइल पाँखी मन के

तरसत रहल जे अब ले

बूँद भर सावन ला जीवन में !'

इहे तड़प आदमी के संघर्ष में जुटल रहे के बल देला; ई भीतर के शक्ति के पहिचान ह। घाम से गरम भुँभुर भइल धरती पर पहिल बरसा से जे सोन्ह-गन्ध उठेला, ऊहे धरती के, माटी के चिन्हासी ह। ऊ गन्ध जिनगी के ह; सावने का सँगे ऊ प्राण के तृप्त करेला, मन के आउर जीवन्त करेला।

भौतिकता के पानी माथ का ऊपर से बह रहल बा आ, आदमी अउँजा गइल बा, साँस भर ले पावे के दम बुझला नइखे रह पावत। जीवन के यथार्थ का

३ / बूँद भर सावन

अध्यात्म के छुन्न चार्हीं। एकरा बिना जिनगी उदासले रही, अभावे में रही।
अतृप्ति के तृप्ति, अभाव के पूर्ति—ई जिनगी के जरूरत ह, जिनगी के रस
एकरे संघर्ष से उपजेला। सावन एही रस का पूर्ति के प्रतीक ह।

‘जोत कुहासा के’ हमरा कवितन आ गद्य-गीतन के पहिलका संग्रह रहे जे
बारह-तेरह बरीस पहिले छपल रहे। एतना दिन का बाद ई ‘बूँद भर सावन।’
कइसन लागल, कतना रस मिलल; ई रउअ बताई। अब त ई रउआ
सोझा बा।

भोजपुरी नयी कविता सर्वश्री रामेश्वर सिंह काश्यप, जितराम पाठक, पाण्डेय
सुरेन्द्र, शारदा प्रसाद, परमेश्वर द्वे शाहाबादी, आनन्द सन्धि-दूत, शशिभूषण
लाल आदि अनेक समर्थ हाथन से सज-सँवरि रहल बा। तनी फीके सही,
आस्था आ विश्वास का रंग में आपन कूँची बोरले एगो किनारे चुपचाप हमहुँ
ठाढ़ बानी। मन अतने चाहता कि

साँसन के पाँव / थथमे ना
चलते चलते / क्षितिज नया खोल जाय !

आ, ओकरा विश्वास बा कि

हमरा लोर के हर कतरा
तहरा ओठन के / मुस्कुराहट होई !

हम कह नइखीं सकत कि ई रचना रउरा कइसन लागी काहे कि—

चल रहल अनवरत जिनगी के चाक
बाकिर / हवा, पानी, माठी कुछ /
बदलल बा अइसन कि
एको सोचलका ना पावत आकार।
सोचले त रहीं बहुत बाकिर × ✕
सबकुछ हो जाला / हमरा ना चहला पर !

पटना

—ब्रजकिशोर

७ अक्टूबर, १९८८

४ / बूँद भर सावन

हैं तभी तो

पुनर्जागरण

के लिए हमें

अपना

पुनर्जागरण

के लिए हमें

अपना

पुनर्जागरण

इयाद में

अपना पुरखा-पुरनिया का
जे परम्परा का भीतर से काँकल
पुरान भीत ढाहि के सया भीत
उठावे के अवसर दिहल ।—

—ब्रजकिशोर

क्रम कविता के

१. खुलल खिड़की / ७
२. बस एक छुअन मीत / ९
३. बूँद भर सावन / ११
४. चउखट / १३
५. शहर का सरेह में गाँव / १५
६. सूपनखा / १७
७. निहचय / २३
८. एक अदद आदमी / २२
९. चिलहोर भइल नजर / २८
१०. सोच / २९
११. नेल्सन मेण्डेला / ३१
१२. लटका / ३३
१३. बिसवास / ३५
१४. करेजा के काँट / ३७
१५. बेवसी / ३९
१६. कहिया दो होई सवेरा / ४१
१७. हम हम ना रहलीं / ४३
१८. संस्कार / ४५
१९. राह के चट्टान / ४६
२०. संसार / ४८



खुलल खिड़की

अतना ढेर हल्ला-गुल्ला,
चीख-पुकार-शोरगुल,
कान के चदरा जनु फाट जाई;
माथा टनकत बा ।

आ ई तेज दुरगन्ध बा आवत
कब्रिस्तान से शायद,
नाक दिहल मोसकिल
बीमार मन टभकत बा !

बन्द कर दिहलीं,
हम खिड़की झपाट से
आई ना गन्ध, शोर-शराबा
कुछ त मिली राहत,
अमन चैन भीतर में ।
बन्द हो गइल हवा,
गुमसुम बा बयार
घुटन हो रहल,
आकाश के ई छोट टुकड़ा
कमरा में कैद हो गइल !
अब ई कइसन बेचैनी
करवट-पर-करवट,
बीछ गइल खटिया पर !

सुगबुगाहट बा सड़क पर
 फुसुर-फुसुर केहू
 बतिआत बाटे बहरी
 दस्तक बा दे रहल
 केहू किवाड़ पर !
 रहल बा कठिन
 बन्द कमरा में पलो भर
 रुक जाई साँस,
 छटपटी में पड़ल प्राण
 जनु छूट जाई ।

खोल दिहलीं खिड़की—
 आकाश झपट के
 आ गइल कमरा में—
 बयार के झोंका
 गँवे से सट के,
 कान में कुछ कह गइल ।
 बहरा बा लटक धूप,
 रोशनी के कतार
 सड़क पर चलल लोगन के चेहरा !
 हारमोनियम बजावत केहु
 गजल गा रहल बा ;
 छोट कमरा अब हो गइल उन्मुक्त
 खुल गइल बन्धन,
 गाछ का फुलुं गी पर बइठल
 हीरामन के आँखि दून
 खुलल खिड़की के देख रहल—
 हौले-हौले मन गुनगुना रहल बा
 मन का कोना ले प्रसरल सन्ताटा
 खिड़की से बहरा निकल गइल !

□

बस एक छुअन मीत !

छु दे मीत,
गँव से
कि हमरा गीतन के शब्द
दिल के धड़कन बन जाय;
मन के बीन
दिग-दिगन्त ले
सुर के बन्दन बन जाय ।

घाटी के दूरी
दूरी ना होला,
बसे भले पहाड़ पर कैहू
नियरा त जियरा होला ।

पवन के छुअन अगरा जाई
जो मन में
प्रेम के आहट होई—
हमरा लोर के हर कतरा
तहरा ओठन के
मुस्कुराहट होई ।

छू दे न यार;
तनिक हौले-से
हरसिंगार का फूल अस
सपना हमार गमक जाय;]
लमहा-लमहा जिनिगी के
खुशबू बन महक जाय !

बस एक छुअन;
कि गीतन के अमराई
मोजराए लागे—
कब से उदास बइठल
ई डारह गदराए लागे !

बस एक छुअन....
कि हरियर घास के फुलुँगी
तनी डोल जाय;
इन्तजार के बाँहि
एक टुम बोल जाय—

सांसन के पाँव
थथमे ना—
चलते-चलते
क्षितिज नया खोल जाय !



बूँद भर सावन

करियाइल
नभ क्षितिज तलक ले,
उमड़-घुमड़ के बरिसल बदरा ।

जुड़ाइल
तपल-धीकल
घरती के हियरा ।

कजराइल
सूखल नैन—
जोहत फूही भर रस
दुपहरिया का आँगन में !

उड़ि चलल
खोलि के डैना
सपनाइल
पाँखी मन कै;
तरसत रहलि जे अबले
बूँद भर सावन ला जीवन में !

जिनगानी के घाम
आग अस्स लहकत
झुँसाइल सभलरम दूभ डिभी ले—

मिरगा अस
 मरुभूमि में डहकत
 धावत प्राण अकुलाइल
 ए टिसुना का बन में !

फाटल बेवाय जनु
 परतीधरती के दरकल
 लरिकार्ई के सपना
 पानी कँदौर बन ढरकल;
 खरकल,
 अपने रवँ में
 लहर असरा के सरकल;
 बाँचल
 सईँचल ढेर रेत के
 सासत साँस पवन में !

परस मेघ के सरस
 तनिक नेह से आइल,
 पुरवाई के लहरा
 शीतल मन्द अलसाइल,
 दे गइल दरस
 कि मन में
 फिन साध गवें अँखुआइल;
 जुड़ि गइल साँस के तार
 गीत के
 छन्द मधुर लहराइल ।
 उड़ि चलल
 पंछी मन के
 ले थाह अथाह गगन में !!

□

चउखट

बहुत दिन से
हम चउखट जइसन
चुपचाप पड़ल
अपनहीं अड़ल
खात अइलीं लात
बात-बेबात !

जेही आइल
से लाँघि गइल—
भा चढ़ि के माथा पर
एड़ी दरकच्चति
हुमचि कै छाती का पार भइल

हम बोललीं कुछुओ ना,
एक टुम ना कढ़वलीं—
अगोरति अइलीं हम
लछुमन रेखा बन
आंगन का भीतर
सीता बहुरिया के ।

बाकिर,
 आजु तऽ
 भर आइल बा मन
 जड़ि ले घुनाइल बा तन
 खंखड़ भइल करेज
 बेतरह गँथाइल बा ।

धीरजा बा छूटत
 सभ मरजाद टूटत
 कब ले निहारीं हम
 अपना के लूटत ?

तँवाइल रहे जे शब्द
 ऊ कण्ठ में रुन्हाइल बा ।
 कठकरेज हमरो अब
 आँच में व्यथा का
 तनिका गरमाइल बा ।

मोसकिल बा मौन होके
 अब सहल लात ;
 लँघात रहला से नीमन
 मेंटो रेघारी ई
 लछुमन रेखा के—
 काम भला का बा
 चउखट
 हर दुआरी पर बनवला के ?

□

शहर का सरेह में गाँव

कहवाँ बा कैबटस
गुलमोहर गाँव में ?
इहवाँ तऽ
सेम्हर कै माथ पर
अमलतास के गाछ पर
लाल-लाल टेसु
आगि अस दहकैला ।

राग के अबीर से
प्रीति-हिया चहकैला
टहकैला गुलाब
मन के आँतर ले बहक जाला ।
पपनी पर नेहियाइल सपना
गँवे से सहक जाला ।

लागेला,
सोना के झुमका
पीयर दग-दग
कनइल का कान में टँगाइल बा ।
आम के डाढ़ि जब मोजराला
तऽ बुझाला
कि ठूँठों पर
मस्ती बउराइल बा ।

१५ / बूँद भर सावन

माथा पर धइल बोझ
 तनी हलुका जाला
 अँतरी के मरोड़ति भूख
 ओठन पर आके मुसुका जाला ।
 खेत-पथार बढ़ावे ला जब से,
 गाँव के मनई सनक गइल—
 भूख का चुल्हा में
 रात-दिन गाछिन के जिनगी घनक गइल ।

परान महसूसे ना,
 आज बसन्त के
 जँतल पाँव आइल ।
 जेठ के तपति दुपहरिया
 घउरति लुकाठी ले
 फागुन के चहेट देले ।
 बुझजवल बचपन के
 बनल ना जवानी के सपना
 झटका से आके,
 बुढ़ारी कुलच्छनी
 सउँसे जिनिगी समेट देले ।

शहर के कैबटस
 उगल ना गाँव में
 बिला गइल
 गोर-गोर महुआ के फूल ।
 पनघट के फुसुर-फुसुर
 बतकही जे थथमल
 गाँव के हियरा हिला गइल—
 बुझला—
 हमार मनगर गाँव
 शहर का सरेह में भुला गइल !



सूपनखा

दुनिया का जंगल में
 वासना झूमेले
 सूपनखा बनि के ।—
 करि कै सिंगार पाट
 सजि के, सँवरि के,
 चिक्कन-चाकन ऊपर ले
 सुन्नर आ मादक
 मन कै लोभावेले !
 फँस जाला मनई
 जब आँखि ई लड़ावेले !!

बनञ्चर हिअऽ;
 गाछ-बिरीछ, नदी-नाला
 सभ कै लाँघति
 बयास अस डोलेले ।
 चाहेले
 भकोस जाय
 जे लउके नीमन
 राम अइसन रूपगर ।
 प्रलोभन दे सुख कै,
 मउज के, मस्ती कै
 रग-रग हवेखेले ।

ऊपर से सोहावन
मादक गदराइल देह;
भीतर से राक्षसी,
करनी में दिलदुखा—
रोआवेले छने-छन
ई वासना के सूपनखा !

ललक वासना के
भोग के चहक
गमक तृप्ति के—
टिक कहाँ पावेला
घड़ी भर, पहर भर ?
अतृप्त मन कलपेला
सुख-खातिर डहकेला
ताकि-झाँकि चारु ओर
फिर-फिर से ललचेला ।

आ,
सूपनखा
नया-नोंचर
गढ़-गढ़ के रूप नवल
छहँतर दिखावति सभ
उरबसी-रम्भा बन,
ठाड़ होले सोझा तब ।

ढुकेले मन में
आँखि से आसक्ति
छा जाले हियरा में
बदरी बन—
बाकी बरसे ना;
तपल तावा पर
पानी के बुन्न अस
छून्न से उड़ि जाले ।

१८ / बूँद भर सावन

रह जाला लुलुआइल
 अतृप्त मन मनई के !
 भोग के इच्छा
 लहोक बनि धधकैले—
 हवन में
 जतने पड़ेला घीव आहुति,
 आगि के लपटि तेज,
 आउर-तेज,
 ओतने ढेर फफनेले !

जर जाला सभ
 ज्ञान, विवेक, नीति, धरम,
 मजहब, इबादत
 पूजा आ भगती
 त्याग आ तपस्या
 मेनका का, रम्भा का
 चितवन में भरमेले ।

करम के गति
 ना जाने कैहू,
 मरम ले भेद कै,
 छेद के करेजा कै,
 सपना का लाश पर
 ऊ वंशो बजावेले ।

भकोसीन हिअऽ
 सूपनखा—
 खाले ई ओकरे
 जे पोसेला, पालेला;
 साधन जुटावेला,
 मोद खातिर एकरा
 जे दिन-रात धावेला ।

थरिया में जवने
 ई खाले सूपनखिया
 छेद सहसरगो पेंदी से झाँकिला ।
 कर देले सरबनास
 लेके खुद सरबग्रास
 खर-दूषन-त्रिसिरा
 अहंकार रावन के
 माटी मिलावेले
 बासना के सूपनखा !

एकर माया ना
 काम करे ओकरा पर
 संयम से बार-बार
 जे ठौकर लगावेला ।
 दोन-दुखियारी का आंसू में
 मुसुकी ला
 जीवन के सरबस जे
 चंग पर चढ़ावेला ।
 सत्य के, शिव के,
 मानेला सुन्दर जे
 अनय अनाचार से जन के बचावेला ।
 दियरी का लौ के
 छाँही में अँजुरी का
 नेह का अलोता जे अलख जगावेला !
 सुख में ना गावे,
 ना दुख में हुँआस पारे,—
 अनका के अन्न-धन
 बाँटेला रात-दिन
 अपने मसान में जे डमरु बजावेला !
 मनस्वी राम अस
 ज्ञान के धनुष हाथ,
 तीर जे विवेक के हरदम चलावेला—

सजग रहेला जे
 जीवन में आठ पहर
 अनकर रूप-धन दीठ ना गड़ावेला !
 कामना जे बहरी से
 हीरा अस चमकेले
 भीतर से काँच ऊ
 परतोख पूरा मानेला !

राग ई आसक्ति के
 अँखियन से आवेला;
 बन के सुगन्ध
 ढुक जाला करेज में ।
 पायल के रुनझुन बत्त
 चहुँपेला मनवाँ ले—
 राग-द्वेष, लोभ-मोह
 काम क्रोध तेज में !

नाक ना कटाय
 एही चिन्ता में दिन-रात
 कवन-कवन नाच ई
 नचावे ना सूपनखा !
 सुनि-सुनि अनकर सभ
 रूप-गुन, बुद्धि, बल,
 धावा-धूपि सगरे
 मचावे ई सूपनखा !

नाक-कान जबले
 रही एकर बन्धु रे,
 छछना के खोरि-खोरि
 खात रही सूपनखा !
 सजग विराग-रूप
 लछुमन के राखीं मन,
 काटीं एकर नाक-कान
 नकटाही सूपनखा !

वासना के सूपनखा
 सुन्नर जे लागेले
 आ जाई तुरते
 असलियत बन सोझा तब ।
 वासना के भूख
 मिटे ना कबहीं,
 गन्ध ना एकर कबहीं ओराला ।

रउरो चीन्ह लीं
 नीक तरे एकरा के—
 देह के पंचवटी
 होखे ना अपावन फिर ।
 ज्ञानी-विरागी सभका पर धावे ई—
 मन का कुटीर में
 प्रेम के सीता
 होखसि मत कतहीं
 एकर शिकार फिर ।

ई राक्षसी बीन्ह ली
 तीख नख-दन्त से—
 पसर जाई जहर जिनगी में सउँसे,
 शान्ति के रउरा हो जाई हरन ।

ई सूपनखा रने-बने
 चार ओरि बिहरेले,
 चीन्ह लीं एकरा के
 नीक तरे जान लीं ।
 आ; सँपरे तऽ
 जिनगी में हरदम परहेज करीं—
 मन का सीता के
 तनिका सहेज करीं ।

□

निहचय

सभे दे रहल बा आवाज,
गोहार के सबद गूँजता;
चीख-चिल्लाहट से भरल बा
पूरब आ पश्चिम
उत्तर भा दक्खिन !

सगरे बा छितराइल त्रास
घर-घर में लागल बा आग
बह-बह धनकति
मँडई-पलानी
कोठा-अमारी ।
दहशत के मारल
सभे घबड़ाइल,
अउँजाइल;
डेराइल भयातुर बा
बहुते हड़बड़ाइल
गला फाड़ के चिचियाताऽ ।
रिरियाताऽ केहू;
कतने कण्ठ बा रुन्हाइल
बेजुबान ?

२३ / बूँद भर साधन

हमहूँ चिल्लाई,
 चिकरीं, पुकारीं;
 लगाईं गोहार,
 आवाज दीं,
 सुर में सुर मिलाके ?
 कि धीर धरीं ?
 बाट जोहीं केहू का आवे के,
 आगि बुतावे के;
 स्वाहा होखे से जग के बचावे के ?
 कि बाल्टी भर पानी ले
 धाईं अकैले,
 चिन्ता-फिकिर ना जिअला भा मरला के ?
 दोहचित में पड़ल
 थथमीं हम कबले ?
 देखीं हम कबले पसरत लहोक के ?
 नाँ;
 हमरा तुरन्ते
 कुछ तऽ करहीं के पड़ी ।
 एह आगि के बढ़ल
 चिनगारी के चढ़ल
 लपलपात लपट के तुरते
 बान्हें के पड़ी मुट्ठी में ।
 उनचासो पवन के हहास
 हियाव का छाती पर लोके के पड़ी ।
 हमरा तुरन्ते
 अब,
 कुछ-ना-कुछ तऽ करहीं के पड़ी !

□

एक अदद आदमी

चल जाले गोली जब
 बारुद धधकेला,
 बम फाट के छितराला;
 तब गोली, बन्दूक आ बम
 ना गुदाने तनिको
 कि सोक्षा के मनई
 कवना मजहब के मानेला,
 कवना जाति के जामल ऊ
 कवना धरम के जानेला !
 ना करे तफरका
 ऊ आदमी भा कुक्कुर में ।
 इहो ना बूझे
 कि मिरतक के बोली का हऽ
 जबान पर गीत बा कि गाली—
 जे मारल जाला
 ऊ एक अदद आदमी होला खाली ।

लाल-लाल रक्त
 कोलतारी सड़क पर
 ढरक जाला ।
 कोमल सपना के रंग
 कवनो राग के छुअन
 ऊ इन्सानी करेजा ह
 जे लाश बनल
 गली में
 बरक जाला ।

२५ / बूँद भर सावन

ओकरा मउअत से
 नसाला ना घरम;
 ना कवनो मजहब
 घवाहिल परिन्दा अस तड़पेला !
 अगरचेत

जो कतहीं
 चोट लागेला—

तऽ आदमियत का जिस्म पर
 गहीर बदरूप

बारूदी दाग जागेला—
 रिस-रिस के खून
 पनाह प्राण मांगेला ।

कैहू का आँखि से बरसत लोर,
 छाती से उठति हूक सजोर,
 मन के चेहरा पर

बेपनाह स्याह दरद,
 पीड़ा के चीख;

निहार के ई सब
 देखि-सुनि के
 खुश जे होला—

दरिन्दा ह ऊ

राक्षस हऽ !

शैतान हऽऽ !!

महज सनक ह एगो
 बउराइल मन के,
 निठाह पागलपन ह
 कवनो भरमाइल तन के —

छाती में कैहू का
 भोंक दिहल छूरा,

सबूत ह

खुदगरजी से उपजल
 घोर कायरपन के ।

ईश्वर—

केहू का बाप के
गुलाम ना हऽ !

खुदा—

केहू का घर के
दरवान ना हऽ !

ऊ प्रेम के नाँव हऽ
दया के अचल ठाँव हऽ,
सगरे व्यापल;
आनन्द का बरगद के
थाकल जीवन ला
शीतल गझीन छाँव हऽ !

हो जाला भूडोल
अवचके,
बाढ़ के पानी टूटेला,
लपकति आवेले आन्ही,
बवण्डर, तूफान—
त आदमी टुका में ना मरे
मरेला से सोगहग इन्सान होला !

आपुस के रिस्ता के
कोमल जे धागा बा
तूड़ीं मत,
ऊहे ए घरती का
ओठन के गान होला !
जे खींच देला दीवार
आँगन में नफरत के—
ऊ खुदगरज कवनो हैवान होला !—
घिरना का माटी में
उपजावे जे प्रेम के अंकुर
ऊ मनई ना; सँचहूँ भगवान होला !!

□

चिल्होर भइल नजर

ई उफनत नदी के धार,
बाढ़ के पानी,
चार ओर समुन्दर के हलफा ।
ढह गइल माटी के दीवार
माटी के देह,
आदमी आ जानवर एक हो गइल ।
बेर्ही में सई चल अनाज दह गइल
जे रहे से देखते में आज बह गइल
पता ना नन्हका के छोट-छोट ओठ
पड़ल चकोह में का-का कह गइल !

राहत का नाँव पर बोल गइल चिरई
मँड़रा के गीध अस
हेलिकोप्टर मंत्री के
ऊपरे-से-ऊपर खबर बटोर गइल ।
हाकिम-हुक्काम सभे खेलत बा झिझिरी,
मस्ती-मउज के मिलल बा मोंका ई
सरकारी माल पर नजर चिल्होर भइल ।

मुट्ठी भर चना,
आ चुटुकी पर भेली
उतर जाई पानी
फिर कैहू दे ली !
राह त राहत के रही अनदेखल
जेकरा पर पड़ल बा अपने ऊ झेली !
अतना अकास अस पसर गइल मन
कि लाश पर बइठ-बइठ राजनीति खेली !
एह देश में कैहू मरे ना भूखे,
ई बाढ़ के पानी कबहीं ना सूखे ।

□

सोच

सोचले त रहीं
 इरादा बुलन्द होई
 हिमालय का माथ अस छुई आकाश !
 झील अस गहीर जीवन के सपना
 आ, नदी अस गतिमान
 गीतन के छन्द होई ।

गाछ अस गोड़ तर आपन जमीन
 हरियर पतई पर फूलन के सीन
 अनका ला तले-तले ठंडई छाँव
 बटोही सुस्ताई, नियराइल गाँव
 सभका ला हियरा में साफ-सुथर ठाँव
 चलत रही पवन अस थाकी ना पाँव !

शब्द-शब्द ब्रह्म-रूप साँच लखनिहार
 निष्कलुष जिनिगी के निश्छल बिस्तार
 सूतेला एक अदद तनहा अन्हार
 कबीरा अस साफ रहे चदरा हमार
 आवत रही खिड़की से शीतल बयार
 गवरइया किरिन के अँगना उचार ।

जीएला जीवन में सूरज के धूप
 हृदय में चन्दा के मुसकानी रूप
 सोचले त रहीं जिनगी के देह उजास
 गंगा के धारा अस मन के विकास
 कोख में धरती का पोसल दुलार
 छने-छने गूँजे मन बंशी पुकार ।

चल रहल अनवरत जिनगी के चाक
 बाकिर,
 हवा; पानी, माटी कुछ
 बदलल बा अइसन कि
 एको सोचलका ना पावत आकार ।

सोचले तऽ रहीं बहुत
 बाकिर....
 सोचला से का ?
 अबहीं ले बिआ ई जिनगी बेकार ।



नेल्सन मण्डेला

काहें करिया चमड़ी खातिर
 गोर चाम वालन का नफरत ?
 एक रक्त बा, एक भाव बा,
 एके सपना; आस-साध बा—
 फिर शोषण-उत्पीड़न के
 चल रहल दमन के,
 जोर जुलुम के,
 काहे चक्कर आज तलक ले ?

खुदगरज इन्सान सत्ता के भूख प्यास में
 सुख-सुविधा के माल समुझि के
 कबले छाती पर हूम करी ?
 कबले दोसरा के जर-जमीन के
 आपन कहके धूम करी ?

बा गवाह इतिहास कबो ना
 रहल अनय के हाथ बनल;
 दबल-जँतल जब भाव भभक के
 उठल; विरोध के साथ ढहल !

दूर दक्खिन अफ्रीकी घरा पर
 बा आज अइसनके युद्ध ठनल
 कण-कण घरती के जाग गइल
 हर मानुष के बा मुट्ठ तनल ।

३१ / बूँद भर सावन

जाति-पाँति आ रंग-भेद के
 काँप रहल बा रह उहाँ पर—
 नवजवान के जोश उमग के
 नाप रहल आकाश उहाँ पर
 नेल्सल मेण्डेला के सूरज
 धधकत गोला के आग बनल
 अन्धकार जेहल के कबले रोकी
 ऊ बाटे अगिया बैताल बनल !

सऊँसे दुनिया के मनुज-शक्ति
 बा ठाढ़ जेकरा मंगल खातिर
 ऊ नेल्सन मेण्डेला बिम्ब बनल
 मुक्ति धरती-जंगल खातिर !

होई जीत मेण्डेला के
 गाँधी के आन्ही बनल रही
 हर जोर-जुलुम का टक्कर में
 सोना परबत अस अटल रही !

पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्खिन
 सगरे बस एके गीत रही,
 ना रंग बरन के भेद रही
 मनई के मनई मीत रही !

ना रही यातना-दम्भ मूर्ख
 ना रह पाई केहू गुलाम
 युग के धड़कन कह रहल इहे
 चल रहल काल बा अविराम !

मेण्डेला बनल
 प्रतीक मुक्ति के—
 आजादी के बिम्ब मेण्डेला—
 अनाचार-दमन का रोधन में
 शक्ति साँस अवलम्ब मेण्डेला !



लटका

ऊँट का मुँह में जीरा अस पून ।
 बाढ़ का पानी अस पाप बनल खून ॥
 साँच बात बोल के लजाए के बेर ।
 झूठ का मुल्लमा में शोहरत डेर ॥
 पाजी बा काजी, राजा अनेर ।
 जनता बा राजी, भोटन के फेर ॥
 वादा का खाद पर सत्ता के फूल ।
 सपना का लाद पर छूरी समतूल ॥
 पान आ पतई के नीमन दस्तूर ।
 फंदा के धंधा, कमीनी भरपूर ॥
 बड़-बड़ हाथन में बोफोसं करोड़ ।
 पदवी भा पद पर मक्खन के होड़ ॥
 काजर के कोठरी, कजराइल नैन ।
 लबजा हिमाकत आ तिकड़मी बैन ॥
 कहे से लुच्चा, लँगटा फकीर ।
 गावेलन घर फूँकि बुरबक कबीर ॥
 नारा-प-नारा, आ मुसुकी अथोर ।
 राम नाम मुँहे बा, भीतर में चोर ॥
 करीं स्याह कतनो करिया भा गोर ।
 देखीं मत बरसत कैहू का लोर ॥
 खून का अबीरे रंगाइल बा गाँव ।
 बेटी आ बहू का भेंटे ना ठाँव ॥
 टी० वी० के परदा प चकमक अँजोर ।
 पीए के पानी बा गड़ही कंदोर ॥

जनता के तंतर, मंतर के लोक ।
 काहे ला सुख-दुख, काहे ला शोक ॥
 हरख-विषाद भर जिनिगी के खेल ।
 सभका के सेवा दीं, जनता के जेल ॥
 फूँकी फोंफी से धनके लहोक ।
 पूछीं कि कइसे लागी अब रोक ?
 ठोक दीं पीठ कि पट्ठा बेहोश ।
 मरिअल देहो में आ जाय जोश—
 ठेल दीं सीमा में कइसन भदेस ।
 आजादी के लेके अइलीं सनेस ॥
 गोली चलावे के ओके दीं सीख ।
 लूट-पाट खाई ऊ मांगी ना भीख ॥
 ऊपर से चिक्कन भीतर से फाँक ।
 देश ओ विदेश के नीति ई बाँक ॥
 मिलीं तऽ मुस्की से, डोल जाय माथ ।
 पड़ोसी के नाक दम, निभ जाय साथ ॥
 भीतर से बाहर ले समझौता शोर ।
 पीट दीं डंका कि उहे हऽ चोर ॥
 एक पाँव धरती पर एक आसमान ।
 वामन जी नापीं ना सगरी जहान ॥
 रहेब गेह में तऽ होई ना पीर ।
 दुनिया में ढेर बा समस्या गम्हीर ॥
 मिलीं गरीब दीन, पूछ लीं हाल ।
 भीड़ जुड़ल भाड़ा पर, भेंड़ के चाल ॥
 नेता जी रउवे पर सभका गुमान ।
 तोंप लीं, झाँप लीं, काट लीं कान ॥
 दस बेर जाप लीं, गांधी के नांव ।
 सुनति रहीं चुपचाप कउवन के काँव ॥
 नजर रहे गद्दी पर, कुर्सी के मोल ।
 पइसा बा पाकिट में, ओढ़ लीं खोल ॥
 □

बिसवास

गाँव का बहरा
टूटल पलानी;
रहेला ओमें
अदद एक परानी ।
ना कपड़ा, ना लत्ता
ना बरतन, ना बासन
ना कतहीं बा लउकत
बइठे कै आसन !

गँवे से साँझ उतरि
आइल बघार में
रात अन्हरिया के
सियाही जवार में ।
लुगरी का आँचर से
तोपि-झाँपि दियरी
रखली दुआर पर
घरती कै धियरी !

सहजे हम पूछलीं
किए बुढ़िया माई,
काहे कै दीया-बाती
लछिमी का आई ?
सौँझ भइल जिनगी के
अबले ना अइली—
अलगे से ठाढ़ होके
मुँहवे बिरदली !

सुन के सवाल, तनी
हँसली ऊ बुढ़िया—
बड़ी बेरहम होले
बेटा, ई दुनिया !
लछिमी आवस भा
आवस नउजी से
जिनिगी ना बीते
ई मनई का मरजी से !

बाकिर बिसवास ईत
आपन ह खासे
आसरा के वास पास
जिनगी का साँसे ।
जिनिगी का साध के
ई दियरी सँघाती
गीत इहे मनवाँ
परनवाँ के बाती !

हमार बिसवास कहीं
छूटे ना हाथ से
एही से दीया
लगाइले माथ से !



करेजा के काँट

गेन्दा, गुलाब हो,
बेली, चमेली हो,
जूही अलबेली हो—
मुरुझाइल पतई
भा कुम्हिलाइल फूल
देख के करेजा में काँट अस गड़ जाला ।

सड़क पर भागत लोग-बाग,
चेहरा पर सटले
साल-दर-साल के कलेण्डर,
तीख घटनन के दाग,
उदासल, बिसुरल, उतरल,
हारल-थाकल, बसियाइल;
बेचैन चेहरा घूर-घूर के,
आँखिन में भर जाला !!

हर इन्सान
गमला का फूल अस
मोहताज बा,
खाद, पानी, हवा आ माटी ला ।
आश्रित बा दोसरा पर ओकर पियास
घरती में नइखे जे जड़;
ऊ असहाय बेसहारा बा ।
बनावटी बा हँसी
दर्द, उदासी, दुराव
जिन्दगी का आईना में
बस ईहे तस्बीर उतर जाला !!

□

३७ / बूँद भर साबन

बेबसी

हमरा चहला से इहाँ
कुछुओ त ना होला—
जे ना चाहीं,
ओइसनके होला ढेर;
बलुक,
सबकुछ हो जाला
हमरा ना चहला पर ।

जब कुछ कहीले सँपर कै,
कि एकर एगो खास मतलब बा
तब शब्द सब अर्थहीन हो जाला,
बलुक,
सब कुछ कहा जाला
हमरा ना कहला पर ।

जीअहीं खातिर मिललिन बा जिनिगी
अनचाहे
जीए के पड़ जाला कई बार
बलुक,
हर बार जिन्दगी हो जाले अर्थपूर्ण
हमरा ना रहला पर ।

का बा इहाँ आपन,
 अपने से सिरजल
 बनावल, सरियावल
 ई घरती, अकास,
 कि बादल, कि बिजुलो,
 गाछी का फुनगी पर
 पतई के थिरकल
 कि दूभी का पात पर
 ओस के बिहँसल—
 का बा आपन ?

सूरज का माथा से चुअल
 घूप के पसेना,
 कि चन्दा का देह के अमरिती गन्ध !
 कुछऊ त नइखे हमार उपराजल—
 आपन कहाय भला अइसनका का बा ?

जब-जब चाहीले
 पत्थर के काट-छाँट
 मन के उतारेला—
 कहाँ बन पावेले मूरत मनचाही
 बलुक,
 सबकुछ बन जाला
 हमरा ना गढ़ला पर ।

अपनहीं साँस से
 बन्हाइल बानीं रात-दिन
 तागा बा अइसन
 कि टूटे ना तुड़लो पर
 चाहीले तूड़े त बेर-बेर जुड़ जाला—
 नियरा बोलाई त गलिए से मुड़ जाला !

जिनगी के आँच ताप
 चाहें कि सह लीं;
 ढेर कुछ हमरा से तनिको सहाय ना;
 जब-जब बुझला
 कि सहल ना जाई अब
 सब कुछ सहा जाला
 हमरा ना सहला पर ।

जब-जब कहीं निहोरा
 हाथ जोर के मांगी
 मउअत के गोद हम;
 तब-तब बुझला
 कि चाहतानीं जीए के—
 जीवन का ?
 मउअत का ?

दूनु त एक रंग
 एकै गो गीत
 छन्द, सुर, लय एकै बा ।

चाहीं कि गाई
 गीत नया; राग नया,
 बाकिर ओठ पर
 मोन आ बिराजेला—
 सब कुछ गवा जाला
 हमरा ना गवला पर ।
 सभी कुछ हो जाला
 हमरा ना चहला पर ।



कहिया दो होई सबेरा

ई हमार गाँव
जहाँ कहियो
आदमी के बसेरा रहे ;
निश्चित रहे रात
आ, फूल अइसन
महकत सबेरा रहे !

रिश्ता का धागा के
बाँचल ईमान,
कंठ में नकहिन का
कजरी के तात
दुख बाँट लेवे के
उमगे उछाह,
पीड़ा में साझी मुन
पसरल पनाह !

उचरे ना अँगना में
उड़ि जाला काँग,
आज हर चेहरा पर
चिपकल बा नाग !
घर-घर में, डगर-डगर
जहर कसमसात,
खउलत बा हवा-पानी
डेग डगमगात ।

४१ / बुंद भर सावन

केहू से केहू का
कवनो ना वास्ता
अलगे बथान बाटे
अलगे बा रास्ता ।

बान्ह बिसवास के
ढहल ढिमलाइल
हियरा में नहर के
पाट बा खोनाइल ।

गाँव अब सिवाने से
घोंट देला साँस,
फूले ना कतहीं
कसउँजा आ काँस !
आजाद हाथ बा
आजाद देह
बारुदी रिश्ता पर
बइठल बा गेह ।

गोकुल बा सूनसान
कहाँ किसुना सँपेरा
भँगुआइल गाँव आज
हो गइल लमेरा ।

रोशनी बिकास के
कि मन के अन्हेरा
का जाने कहिया दो
होई सबेरा ।



हम हम ना रहलीं

पुकारऽ मत हमरा के मीत,
बहुत; बहुत दिन ले
कइलीं इन्तजार बोलाहट के ।

बाट जोहत पथरा गइल नैन अब
थाक गइल पाँव,
भोथरा गइल सैन सब ।

कहले रहल
कि बोलाइब तहरा के
तबहीं से पलक बिछवलीं हर राह पर
सिसके बयार जब हौले-से
गते-गते डोले गाछिन पर पात जब,
कोशिश कइलीं सुन लीं तहार ध्वनि !
का जाने काहे दो
अइल ना मीत तू !

बीत गइल कतना दो
पल-पल कर काल क्षण
कै बेर बसन्त आइल
कतना दो सावन ले ।

उमड़-धुमड़ आइल मेघ
पाँख पसार उड़ गइल—
कतना दो राही के
राह का माटी में / हड़डी ले गड़ गइल !
पगडंडी पर उड़-उड़ के धूल फिर बइठ गइल
हृदय कै बीन बाजल कई बेर,
कई बेर लय-धुन हवा में समा गइल ।

पपनी ले सटल ना जोहत बाट मीत,
 बाकिर ना अइल / ना हमरा बोलवल तू !
 अब काहे ला हमरा पुकारे लऽ,
 काहे ला बार-बार जोर से हँकारे लऽ ?
 अतना अकुलाइल हँडबड़ाइल बाड़ऽ काहे—
 अतना अगुताहट रहे तऽ अइलऽ ना काहे ?
 तब कहाँ रहल
 जब टरे हमार मन ?
 एही तरे हमहूँ पुकारीं हो आकुल तब !
 बोझ ढोअत कान्हा पर
 जेऽ दुःहरिया में हाँफ-हाँफ जाई हम !
 ओद जरावन अस रहीं धुआँत
 सिगरेट अइसन सुनुगीं
 ना धनकीं, ना लहकीं !
 गोड़ में फाटल बेवाय
 जब-जब पीराय आंकड़ पा राह पर—
 रोआँ-रोआँ रह-रह के तहरे पुकारे तब !
 तब ना अइलऽ,
 अब अइल हऽ;
 बाँचल बा का-जिनिगी में हमरा,
 तहरा अइला के मीत, भला आज कवन अर्थ बा ?
 ना बाँचल बा साध / ना सपना बा शेष अब,
 मिट गइल पियास / ना रहल बा आस कुछ,
 धनक गइल ललक / लहसि गइल लालसा
 भूखि ले मर गइल / थाकल बदन में ।
 इहे खंडहर बा बाँचल / गवाही में ठाढ़
 कि तहरा इन्तजार में / केहू हड्डी ले गला दीहल
 मीत हमर,
 जब हम रहलीं तऽ / तू ना रहलऽ
 जब तू बाड़ऽ आइल
 तऽ हम हम ना रहलीं ।

□

संस्कार

ओह दिन,
 सुरुज उगे का पहिलहीं अनगूँसे
 अनजाने में बो दिहलीं बीआ
 अपना मन का माटी में ।
 सपना का पानी से
 पटवलीं हम बेर-बेर ।
 अनचाहा दरद के धूप
 भाव के मुट्ठी भर छाँह
 ललसा के छईंटी भर खाद
 सबकुछ देके
 थाक गइलीं हम—
 बीआ बा अइसन अजीब
 ना अँकुराइल,
 ना बढ़ल—
 ना फूटल एको गो कलँगी,
 ना लतराइल,
 ना फरल !
 मन के धरती
 ऊसर ना ह, ना बाँझ ह
 ऊ नीमन उपजाऊ
 कोख में सम्हरले बिआ बीआ
 जे आजुओ नइखे मरल ।
 खाली जड़ एगो फूटल
 जे हमरा करेजा का भीतर ले,
 सम्पूरन गहिराई में पसरल बा
 कैसर खानी !



राह के चट्टान

राह पर हमरा
एगो चट्टान रहे पड़ल ।
लड़त रहलीं हम अकेले
दम ना धरल ।

जतने करीं वार
मुक्का-लात,
करीं घात—
ओतने चट्टान ई
बेईमान अड़ल ।

जिनिगी के सूरज
चारु ओर भटक के
रह गइल गाछ पर
उलुटे लटक के ।

अंग-अंग हो गइल
लोहलुहान
दिन बीत गइल
फिर हो गइल बिहान
घसकल ना जवो भर
रास्ता सै चट्टान
भूख से, पियास से
आकुल हो गइल प्राण !
मंजिल बा दूर अभी
राह बाटे बन्द !!

लड़त-लड़त पले पल
 पसेना से तर-ब-तर
 हिम्मत दे गइल जबाब
 फिर भी हियाव हम
 लगवली बटोर के—
 गिरत-गिरत सुनली
 आवाज—

तू आ गइल ?
 आँखि खोलि के देखली
 चूर-चूर होके चट्टान
 सोझा बा पसर गइल ।

चट्टान कवनो फूल ना हऽ
 चट्टान त पत्थर हऽ
 मुमकिन ना होला
 अकेले दम लड़ल !
 कण-कण के तूड़ल !!
 जब साथ में रही
 तहार एहसास;
 तब चट्टान का;
 पहाड़ो के तूड़ के छाती,
 सहज बा
 मंजिल के राह चलल ।
 ठीके भइल
 कि आ गइलऽ तू ।



संसार

ई भोर—

कबहीं अतना पियराइल ना रहे,

ई दिन—

कबहीं बोखार अस पितराइल ना रहे,

सून-सून दुपहरिया—

कबहियों

अतना पथराइल ना रहे,

ना साँझ कबहीं अतना

उदासी से नहाइल रहे !

ना आजु ले

सूरज कबहीं

थकल-थकल लागल !

आकास का अंगना में

टुका-टुका बादल ;

हवा में साँय-साँय

कवनो अनजान

फुसफुसाहट के शीत-युद्ध !

पंछी जे उड़-उड़ के

जात रहे छितिज तक,

बेरि-बेरि काहे ऊ बइठत बा गाछ पर ?

काहे हो दसो दिशा

घबराइल भयातुर बा—

हरमेसा के शान्त

गम्भीर ई आकास,

ना जाने काहे हो,

अतना ब्याकुल बा ?

घरती खानी ऊपर

आकासो में कवनो

संसार बस गइल का ?



नवविंशति शतक